संजय की कलम से ..

समाज सेवा

संसार में सभी प्रकार के सेवा कार्यों के पीछे भाव दुखियों को सुखी बनाने का है। सेवा करने से मनुष्य में नम्रता, उदारता, त्याग, कार्य कुशलता, सहयोग इत्यादि कई गुणों का विकास होता है जिनसे उसे उच्च कर्त्तव्य का श्रेष्ठ फल मिलता है। इसलिए कहा गया है कि 'सेवा बिना मेवा नहीं।' अध्यात्म में विश्वास न रखने वाले भी बहुत-से लोग समाज सेवा में लग जाते हैं। वे बालकों तथा बालिकाओं की शिक्षा, महिलाओं के जीवनोत्थान, पतित स्त्रियों के कल्याण-कार्य, दलित एवं पिछड़े वर्गों की उन्नति से सम्बन्धित कार्य, अपठितों के लिए पठन-पाठन के साधन जुटाने तथा भूखों-नंगों और बाढ़ पीड़ित लोगों को राहत पहुँचाने में लग जाते हैं।

परन्तु परमात्मा कहते हैं कि आज करोड़ों लोग स्वयं को ही नहीं जानते और उन्हें परमपिता परमात्मा का भी ज्ञान नहीं है। अत: ऐसे अपठितों को पहले जीवन के मूल्यों का ज्ञान देना, मनुष्यता का पाठ पढ़ाना, अच्छी आदतें सिखाना ज़रूरी है। 'अक्षर' शब्द का अर्थ है जो विनाश न हो। अत: वर्णमाला के अक्षरों के ज्ञान से भी पहले तो मनुष्य को 'नाश' न होने वाली, (अक्षर) आत्मा का तथा परमात्मा का ज्ञान ज़रूरी है तथा आत्मा और परमात्मा के बीच प्रेम के ढाई अक्षर पढ़ना भी आवश्यक है। हाँ, भाषा के अक्षर पढ़ना भी ज़रूरी है परन्तु एक अच्छा नागरिक अथवा एक अच्छा मनुष्य बनने की विद्या पढ़ना उससे भी ज्यादा ज़रूरी है वर्ना पढ़-लिखकर भी यदि मनुष्य धोखेबाज, रिश्वतखोर, स्मगलर, जमाखोर तथा काम वासना द्वारा दूसरों को पतित बनाने वाला और जन-संख्या में अतिवृद्धि करने वाला हो तो वह समाज के लिए अभिशाप ही है।

अत: समाज के लिये सबसे बड़ी सेवा मनुष्य को ईश्वरीय शिक्षा द्वारा नैतिकता का एवं आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ाना है। काम क्रोधादि विकार से कोढ़ी बनी आत्मा के कुष्ठ रोग को दूर करने की सेवा करना है। मन में विकारों की बाढ़ से पीड़ित, क्रोध के भूचाल से दुखित आत्मा को राहत पहुँचाना एक महान समाज सेवा है जिससे कि समाज की सभी समस्याओं का समूल अन्त हो जाता है। आपदा आने पर लोगों को वस्त्र, अन्न, औषधि तो देनी ही चाहिए परन्तु इस दुख-ग्रस्त संसार के ढांचे को ठीक करने के लिए, मनुष्य मात्र को सदाचार एवं सात्विकता का पाठ पढ़ाने रूपी समाज सेवा से लाभान्वित करना आवश्यक है। ❖

अमृत-सूची

- राजयोग का प्रयोग *(सम्पादकीय)*..... 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .6
- 'पत्र' संपादक के नाम 8
- ईश्वरीय कारोबार में.....9
- सार्वभौमिक बंधुत्व का 12
- बाबा ने बनाया आयुष्वान 14
- विनाश छोड़.....15
- भगवान की पनाह में.....17
- मुझे ज्ञानामृत मिल गई 18
- वरदान बन गये वे शब्द.....19
- जीवन की दिशा बदल गई ...20
- 'मैं' क्या हूँ *(कविता)* 21
- पति का परिवर्तन.....22
- परमात्म प्रेम में विश्वास 23
- कहीं हम परवश तो नहीं? ...24
- आवश्यकता है 25
- खुदा मुझ पर फिदा.....26
- नारी का सम्मान *(कविता)* 27
- बच्चों की दुनिया 28
- सफलता का मंत्र.....31
- सचित्र सेवा समाचार 32
- पानी की सीख 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com